Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VIII, Issue No. XVI, Oct-2014, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

हिन्दी साहित्य में मुन्शी पमचन्द द्वारा दलित विमर्श के सन्दर्भ में ऐतिहासिक एवं राजनीतिक कहानियों का वर्गीकरण

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VIII, Issue No. XVI, October-2014, ISSN 2230-7540

हिन्दी साहित्य में मुन्शी प्रेमचन्द द्वारा दलित विमर्श के सन्दर्भ में ऐतिहासिक एवं राजनीतिक कहानियों का वर्गीकरण

Jyoti Gupta

Research Scholar, Sai Nath University, Ranchi, Jharkhand

----------X----------

प्रस्तावना

प्रेमचन्द जी ने अपनी प्रारम्भिक कहानियॉ इतिहास एवं ऐतिहासिक घटनाओं को लेकर लिखी हैं। उन्होंने अपनी इन ऐतिहासिक कहानियों में न केवल हमारे इतिहास के पन्नों को पलट कर पाठकों के सामने सच को दर्शाया है बल्कि उन कहानियों के माध्यम से हमारे सामने भरतीय मूल्यों को, राजा का प्रजा के प्रति कर्तव्य परायणता को, नारी शक्ति एवं उसके पतिव्रत को, राजा की विलासिता से हो रहे नुकसान को, और प्यादों की कुशलता का गलत इस्तेमाल करने से हो रहे नुकसान को, एवं ये चीजें किस तरह से देश की बर्बादी का कारण बनते है, यह भी दर्शाने का प्रयत्न किया है। प्रेमचंद अपनी इन कहानियों में यह भी दर्शाते हैं कि पहले से लेकर आज तक लोग सत्ता के लिए अपने भाई को मारने से भी नहीं डरते। प्रेमचंद की ऐसी ही ऐतिहासिक कहानियों को लिया गया है, जिसका संबंध किसी न किसी तरह इतिहास से है।

प्रेमचंद जी ने अपने समय की राजनैतिक परिस्थिति को भी ध्यान में रखकर, उसे अपनी कहानियों के माध्यम से लोगों के सामने प्रस्तुत किया है। कुछ कहानियॉ ऐतिहासिक है, जिसमें राजनीति को मुख्य रुप से दर्शाया गया है, ऐसी कहानियों को भी यहॉ लिया गया है। प्रेमचंद इन कहानियों के माध्यम से लोगो के सामने आदर्श राजा, नेता एंव आदर्श समाज की नीव रखते हुए लोगो को सही एंव गलत का फर्क दिखाते हैं। ड़ॉ रामबक्ष कहते है कि, ''वास्तव में प्रेमचंद ने राजनीतिक विषयों पर कहानियॉ लिखना अब कम कर दिया इसका एक कारण यह था कि प्रेमचंद के कांग्रेस से मतभेद बढ़ते जा रहे थे, फिर भी वे उस संस्था के हमदर्द थे क्योंकि वही संस्था समर्थ ढ़ंग से साम्राज्यवादियों से संघर्ष कर रही थी ऐसी संस्था का विरोध करके वे अप्रत्यक्ष रुप से ब्रिटिश साम्राज्यवाद का समर्थन नहीं करना चाहते थे। फिर भी उन्होंने कुछ कहानियॉ लिखी है।''

ऐतिहासिक कहानियों का वर्गीकरण

1. राजहठ

इस कहानी में प्रेमचंद ने पिता के कर्तव्य पलायनता पर पुत्र के विरोध को दर्शाया है। अचलगढ़ के राजा देवमल अचलगढ़ में धूम–धाम से दशहरे का त्यौहार मनाना चाहते थे, जिसकी वे तैयारी कर रहे थे। यह वह समय था जब अंग्रेजों ने पूरे राष्ट्र को अपने चंगुल में ले लिया था। राजा देवमल पर काफी ऋण था, जो उन्हें चुकाना था। अचलगढ़ के कितने ही परिवारों में आज भी चूल्हे नहीं जल रहें हैं। इस पर राजा का यह फिजूल खर्च राजा देवमल के पुत्र कुँवर इन्द्रमल, जिसे न ही पूजापाठ में दिलचस्पी थी और न ही वह कभी मजदूरों पर हाथ, तलवार उठाता था। वह काफी पढ़ा लिखा था। उसने पिता के इस खर्च का विरोध किया। कुँवर का कहना था कि दुर्गा पूजा की परम्परा को न तोड़कर सादे ढंग से त्यौहार मना लिया जाय पर राजा इस बात को मानने के लिए तैयार न थे। इस पर राजा और उनके पुत्र में बहस हो गई जिससे राजा ने अपने पुत्र को घर से निकाल दिया। रानी को इस बात का पता चला तो वह भी राजा से जबाब–तलब करने लगी जिससे राजा ने उन्हें भी निकाल दिया। तीन दिन तक कुँवर भूखा–प्यासा घूम रहा था और एक पेड़ के नीचे आराम करने बैठा तो उसने सपने में अपनी मॉ को देखा और जब उसने ऑख खोली तो उसकी मॉ उसके सामने खड़ी थी। कुँवर ने अपनी मॉ को बताया कि उसने पोलिटिकल एजेन्डे को सब बता दिया है। जिस पर रानी नाराज हुई। कुँवर ने माफी मांगी। तभी नाचने–गाने वाले उदास होकर जा रहे थे। जिससे कुँवर को पता चल गया कि पोलिटिकल एजेन्डे ने तार भेज दिया है। रानी बोली शायद यही राजहठ है।

2. राजा हरदौल

'राजा हरदौल' कहानी में जहॉ एक ओर सामन्तीयुग के त्याग और बलिदान, उत्सर्ग और उसके आदर्श को प्रस्तुत किया है। वहीं दूसरी ओर उस ह्रासोन्मुख युग के ईर्ष्या, द्वेष एवं अविश्वासमय वातावरण का यथार्थ चित्र दिखाया है। यह कहानी सामन्ती युग के विषाक्त वातावरण के यथार्थ के चित्र को प्रस्तुत करती हुई दिखाई देती है। बुन्देलखंड में ओरछा पुराना राज्य था, जिनके राजा बुन्देले थे। इस समय ओरछे के राजा जुझारसिंह थे, जो बड़े साहसी और बुद्धिमान थे, इसीलिए लोदी जब लूटते–पाटते ओरछा में आया तो राजा ने उसे बड़ी कुशलता के साथ हराया। जिसके कारण दिल्ली के राजा शाहजहॉ उन पर काफी प्रसन्न हुए और दक्खिन का कार्य भार उन्हें सौंप दिया। जुझारसिंह ने अपने भाई हरदौल को ओरछे का कार्य दिया तथा अपनी पत्नी कुलिना को समय–समय पर हरदौल का साथ देने की सूचना देकर दक्खिन चला गया। बाद में हरदौल ने बड़ी कुशलता और चतुरता के साथ राज्य चलाने लगा। हर एक छोटे बड़े निर्णय वह अपनी भाभी से पूँछकर ही

www.ignited.in

लेता और कुलीना भी अपने देवर को बेटा समझकर उसका साथ देने लगी। हरदौल के हसमुख स्वभाव के कारण उसका कोई दुश्मन न था। जुझारसिंह के दुश्मन भी हरदौल के दोस्त बन गये। होली के अवसर पर दिल्ली का कारिन्दा खॉ ओरछे में आया और ओरछे के शूरवीरों को चुनौती दे डाली। इस चुनौती में बुंदेले के वीर योद्धा नाक कालदेव, औरा भालदेव बुरी तरह से घायल हो गये। हरदौल अपने भाई की तलवार लेकर खुद अखाड़े में उतरा। और पूरे दिन वह युद्ध करता रहा और कादिरखॉ हार गया, लोग हरदौल की जय–जय करने लगे।

3. परीक्षा–

नादिरशाह ने दिल्ली सल्तनत में खून की नदियॉ बहा दीं। सब लोग अपनी जान बचाकर भाग रहे थे। नादिरशाह दिल्ली के महल को देखकर दंग रह गया। उसने इतना सुख सामग्री के साधन कभी नहीं देखे थे। वह गरीब खानदान का था तथा उसका पूरा बचपन रणभूमि में ही बीता था। जब वह दीवानखाने में गया तो उसने अपने लोगों को विश्राम करने को कहा तथा एक दरोगा को बुलाया और कहा कि सभी रानियों को सजाकर यहॉ बुलाया जाय। हम उनका नृत्य देखेंगें। यह रानियों का अपमान था। जो कभी सूर्यप्रकाश में न गई थी, वे आज सजधज कर दीवान खाने में गई। इनमें से कई रानियॉ राजपूतानी थी, पर किसी ने इस पैगाम को नामंजूर न किया और न ही कटार लेकर आगे बढ़ीं। नादिरशाह ने इन परियों को देखा और आधा घण्टा सो गया जगने पर नादिरशाह ने रानियों को कहा कि आप में किसी ने मेरा पैगाम न ठुकराया और न ही मेरे सोने पर मुझे मारा। अब आप किसी में गैरत नहीं बची है। अब इस सल्तनत को कोई नही बचा सकता। नादिरशाह मात्र उन रानियों की परीक्षा ले रहे थे। नादिरशाह ने तुरंत उन रानियों को वापस भेज दिया।

4. शिकारी राजकुमार

जिसका प्रथम प्रकाशन उर्दू में अगस्त 1914 को 'जमाना' में हुआ तथा 'प्रेमपच्चीसी' में संकलित हुई है। हिन्दी में 18 अगस्त 1919 को स्वदेश' में प्रकाशित हुई थी और मानसरोवर–8 एवं प्रेमचंद की संपूर्ण कहानियॉ –1 में संकलित की गई। इस कहानी में एक राजकुमार हिरन का शिकार करने के लिए घंटो से हिरन के पीछे दौड़ रहे थे। घोड़ा और राजा दोनों पसीने से तरबतर हो गये थे। दौड़ते–दौड़ते राजा ने हिरन को वहॉ मार गिराया जहॉ वह नदी नहीं पार कर सकता था। वह हिरन बहुत बड़ा था। राजकुमार ने चैन की सांस ली। तभी नदी में से एक सन्यासी आया और उसने राजा की आवभगत करने तथा थोड़ा विश्राम करने के लिए उन्हें अपने आश्रम में ले गया। वहॉ बड़ी ठंड़क थी राजा का मन प्रसन्न हो गया। थोड़ी देर बैठने के बाद राजा का मन घर की ओर गया और उन्हें चिन्ता होने लगी कि काफी देर हो गई है कहीं घर के लोग मुझे ढूॅढ़ने निकल न गए हों। तभी राजा ने सन्यासी के मीठे गाने की आवाज सुनी राजा का मन प्रसन्न हो गया। राजा ने सन्यासी से जाने की आज्ञा मॉगी तो सन्यासी ने रात को शिकार करने की प्रतिज्ञा देकर उन्हें रोका। रात को राजा और सन्यासी दोनो शिकार पर निकले। पहले उन लोगों को डाकू मिले इस पर सन्यासी ने कहा कि आपको इनका शिकार करना चाहिए क्योंकि ये लोग लोगो को मारते पीटते हैं। बाद में राजा और सन्यासी आगे गए जहॉ नाच–गाने का जश्न चल रहा था। सन्यासी ने बताया कि यह वह पंडित है जो खुद को सन्यासी बताता है और भोग विलास करता है तथा लोगों को बुद्धू बनाकर उनसे खिलवाड़ करता है। आपको इनका शिकार करना चाहिए। राजा कि जिद पर वे लोग कचहरी पहुॅचे जहॉ का सुबेदार दिन रात कचहरी चालू रखता था। कारण कि वह धन का पुजारी था। वह लोगों की जमीने और धन लूटता था। राजा ने खुद एक विधवा स्त्री की जमीन हड़पने की चर्चा सुनी तो उनका खून खौल गया। सबेरा होने पर सन्यासी राजा को आश्रम पर ले गया। दूसरे दिन सन्यासी ने राजा को कहा कि उन्हें ऐसे लोगों का शिकार करना चाहिए जो उनकी प्रजा को पीड़ा देते हैं। इन मृग पशुओं के शिकार से उन्हें यशकीर्ति नहीं प्राप्त हो सकती है। इसी पर रामदीन गुप्त कहते हैं कि– ''कथावस्तु, चरित्र चित्रण और कलात्मक दृष्टि से यह एक साधारण कहानी है किन्तु इसकी विशेषता इस बात में है कि इसमें हमें प्रेमचंद के उस मानवतावादी रूप का दर्शन होता है जो अन्याय प्रतिकार में सदैव तत्पर रहता है।

राजनीतिक कहानियॉ

1. शेख मखमूर

जन्नतनिशॉ एक मुल्क था, जिसके राजा शाह बामुराद थे। शाह किशवर ने इस मुल्क को जीत लिया। राजा बामुराद, अपनी हार को न सह सका और एक चोटी पर योग की अवस्था में बैठ गया। लोग उसे फकीर समझकर बहुत मानने लगे। समय बितने पर राजा को महसूस हुआ की वह बूढ़ा हो रहा है इसलिए उसने गॉव के पंचो से उसकी शादी करवाने की मॉग की। पंच उनकी इज्जत करते थे इसलिए उनकी शादी पंचो ने रिन्दा से करवाई, जिनसे उन्हे एक बेटा हुआ जिसका नाम मसऊद था। मसऊद बड़ा तेज, होशियार, शेर के शिकार में माहिर, बाकि बच्चों से अलग था। उस समय राज पर किशवर का बेटा किशवरकुशा दोयम था। उसने सभी पूराने मुनीमो तथा लोगों को राज्य से निकाल कर, नए लोगो को शामिल किया। उसके समय जुल्म एवं अत्याचार बढ़ने लगे जिसकी वजह से लोग बगावत पर उतर गए। मसऊद की मुलाकात मलिका शेर अफगन से शेर शिकार में हुई जहॉ दोनों में बड़ी तलवार बाजी हुई, जिसमें मसऊद बुरी तरह से घायल हुआ। दो हफ्ते बाद जब वह ठीक हुआ तो मलिका ने उससे उसकी तलवार मॉगी। जिसके कारण दोनों फिर से युद्ध करने लगे पर मसऊद ने मलिका को बताया कि यह तलवार उसके पिता की है और उन्होंने तलवार और ताज देकर वचन लिया है कि वह राज वापस लेगा। लोगों ने राजा के खिलाफ एक सेना तैयार किया और एक हफ्ते के बाद युद्ध करके राज्य एवं वहॉ का माल लूटते गये। इन सभी सैनिकों में मसऊद बड़ा चतुर था और वहीं वह सैनिको का हौसला बढ़ाता एवं युद्ध भी सिखाता था। इस सेना का मुखिया नमकखोर था। इन लोगों ने मीर सुजा जैसे योद्धा को भी हरा दिया लेकिन मीर राजा के हराने के बाद मलिका शेर अफगन की वजह से लोगों में मसऊद के लिए गलत फहमी हो गई। वे लोग उसे गद्दार कहने लगे इसलिए मसऊद को अपना राज्य जीतने के लिए निर्दोष होते हुए भी अपनी तलवार वापस देनी पड़ी और वह वहॉं से चला गया। बाद में मसऊद ही शेख मखमूर बनकर वापस सेना में शमिल हो गया और अपने हौंसले से राज्य को जितवाया। राज्य जीतने के बाद मलिका सिंहासन पर बैठती है। मलिका को शेख मखमूर की असलियत का पता चलता है इसलिए वह उससे शादी कर लेती है। वह चाहती है कि मखमूर राज करे लेकिन मखमूर मना करता है तभी वहॉ राज दरबार में रिन्दा जो बूढ़ी हो गई है वह आती है और मुकुट मलिका के माथे पर देखकर उसके बेटे का पता न होने की खबर देती है। मखमूर यह सुनकर आकर रिन्दा का पैर छूता है। सबको पता चलता है कि मखमूर ही मसऊद है और इस राज्य का राजा। सब उसको बधाई देते हें और उसे राजा बनाते हैं। उसी समय रिन्दा का लक्ष्य पूरा होते ही उसके प्राण पखेरू उड़ जाते हैं।

www.ignited.in

2. आल्हा

आल्हा नाम का एक वीर था, जो पुराने जमाने में चन्देल राजपूतों में वीरता और जान खेलकर स्वामी की सेवा करने के लिए मशहूर था। किसी राजा–महाराजा को उतनी अमरकीर्ति नहीं मिली थी उतनी आल्हा को मिली थी। आल्हा–ऊदल दो भाई थे। जिनके वीरता के किस्से लोग बड़ी चाव से 'आल्हाड़ी' के नाम से जानते थे। राजा परमालदेव चन्देल खानदान का आखिरी वारिश था। महोबा उनकी राजधानी थी, लेकिन आल्हा–ऊदल ने मिलकर महोबा को दिल्ली–कन्नौज की तरह बना दिया था। आल्हा–ऊदल पिता जसराज वीर थे, जो एक लड़ाई में मर गए थे। राजा परमालदेव ने इन दोनो को रानी मलिनहा की गोद में डाल दिया। रानी उन्हें अपने बेटों की तरह पालती थी और सारी शिक्षा प्रदान की।

3. प्रतिज्ञा (रूहे स्याह/कलुषित आत्मा)

इस कहानी में प्रेमचंद ने ऐतिहासिक तौर पर राजा के कर्तव्य को दिखाया हैं। इस कहानी की शुरुआत ही सारे राज्य में हाहाकार से होती है। पिछले एक साल से राज्य में बारिश की एक बूँद भी न गिरने पर राज्य में हाहाकार मचा हुआ था। सब लोगो ने भगवान का नाम लिया, मिन्नतें की, कुर्बानीयॉ दी, यज्ञ किए, पर बारिश न हुई। राज्य के महान गुरु बाबा दुलर्भदास, तथा मोलवी मोलाना शेख आबिद से लोगो ने इस मसले का हल मॉगा। पूरे देश से सभी महान गुरुओं तथा मोलाना को बुलाया गया तथा एक पहाड़ पर सबने तीन घण्टे तक धूप मे भगवान की हर क्षमता से पूजा की। किसी ने समाधी ली, राम नाम का जाप किया योग, कथा सुनना आदि फिर भी कोई बादल न दिखाई दिए। बाबा दुर्लभदास ने लोगो को कहा कि अब उन्हें राजा को ही इस मसले के बारे में बताना पड़ेगा। राजा ही बारिश ला सकते है। लेकिन राजा आमोद–प्रमोद और भोग–विलास मे लिप्त थे राजा के मुनीम तथा सेनापति राजा को कोई भी बात बताकर अपना नुकसान करना नहीं चाहते थे।

4. सत्याग्रह

इस कहानी में दिखाया है कि हिज एक्सेलेसी जो वाइसराव हैं वह बनारस आने वाले थे इसलिए कांग्रेस के नेता हड़ताल करने वाले थे। बाजार भी बन्द रखवाने वाले थे। रायसाहब और राजासाहब इस समस्या को दूर करने के लिए मोटेराम शास्त्री को अनसन पर उतर कर धर्म के नाम पर लोगों को रोकने को कहा। रायसाहब और राजासाहब चाहते थे कि धर्म नाम से डरकर लोग बाजार खुला रखे। इसके लिए मोटेराम शास्त्री को काफी धन प्राप्त हुआ। दो दिन तक तो उनका अनुष्ठान चला पर रात में मंत्री जी की चाल में फॅसकर मिठाई और पानी पी लिया और उनका अनशन टूट गया। सारे समाज को इस बात का पता चल गया इसी पर अपना विचार प्रकट करते हुए जगतनारायण हैकरवाल लिखते हैं कि– ''यह लघु कथा नगर के धनी मानी व्यक्तियों तथा बनारस के प्रसिद्ध पंडितों पर व्यंग्य है। पं. मोटेराम शास्त्री उस नैतिक पतन का प्रतिनिधि करते हैं, जिसके जाल में उनका वर्ग फॅसा हुआ था क्योंकि उन्होंने अपनी अन्तरात्मा को चॉदी के कुछ सिक्कों के लिए बेंच दिया था। पंडित मोटेराम का चरित्र काल्पनिक नहीं हैं। उनके नाम का व्यक्ति वास्तव में बनारस में रहता था, इस बात का उल्लेख श्रीमती शिवरानी देवी ने अपनी पुस्तक 'प्रेमचंद घर में' किया भी है।''

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. लोकजागरण और हिन्दी साहित्य का इतिहास–आचार्य रामचन्द शुक्ल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली–2, प्रथम संस्करण–1985
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास–डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 23, दरियागंज, नई दिल्ली–110002, द्वितीय संस्करण–1976
3. हिन्दी साहित्य कोश–भाग–1,धीरेन्द वर्मा, प्रकाशक ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, द्वितीय संस्करण– 1963
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास–आचार्य रामचन्द शुक्ल, भूमिका–डॉ रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, नई दिल्ली
5 हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास–रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण–1986
6. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास (खण्ड–2) – डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पंचम संस्करण–1994
7. हिन्दी साहित्य का बृहद इतिहास सोलह भागों में (भाग–13) नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, प्रथम संस्करण–1970
8. हिन्दी साहित्य का प्रवृत्तिपरक इतिहास–डॉ. सभापति मिश्र, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण–2009
9. श्रेष्ठ कहानियॉ–सम्पादक–डॉ. मायाप्रकाश पाण्डेय, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण–2009
10. कहानीकार प्रेमचन्द–डॉ. सुशीलकुमार फुल्ल एवं आशु फुल्ल, भावना प्रकाशन, दिल्ली–91, प्रथम संस्करण–2001
11. कहानीकार प्रेमचन्द रचनादृष्टि और रचना शिल्प–शिवकुमार मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, 15–ए, महात्मा गांधी मार्ग इलाहाबाद, प्रथम संस्करण–2002
12. प्रेमचन्द और शैलेष मटियानी की कहानियों में दलित विमर्श–डॉ. कल्पना गवली, चिन्तन प्रकाशन, 3–ए/119, आवास विलास, हंसपुरम, कानपुर–208021, प्रथम संस्करण,– 2005
13. हिन्दी कथा साहित्य–गंगा प्रसाद पाण्डेय, प्रकाशक तथा विक्रेता, भारती भण्डार लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, सं. 2008 वि.

14. भारतीय स्वातंत्र्य आन्दोलन और हिन्दी साहित्य–डॉ. कीर्तिलता, हिन्दुस्तानी एकेडमी इलाहाबाद, प्रथम संस्करण–1967

15. 1857 के स्वाधीनता संग्राम का हिन्दी साहित्य परप्रभाव–डॉ. भगवानदास माहौर, प्रकाशक–जयकृष्ण अग्रवाल, कृष्णा ब्रदर्स, अजमेर, – 1976